सिकोयाह

जिस चैरुकी आदमी ने
अपने लोगों को लिखाई दी

सिकोयाह

सिकोयाह

जिस चैरुकी आदमी ने
अपने लोगों को लिखाई दी

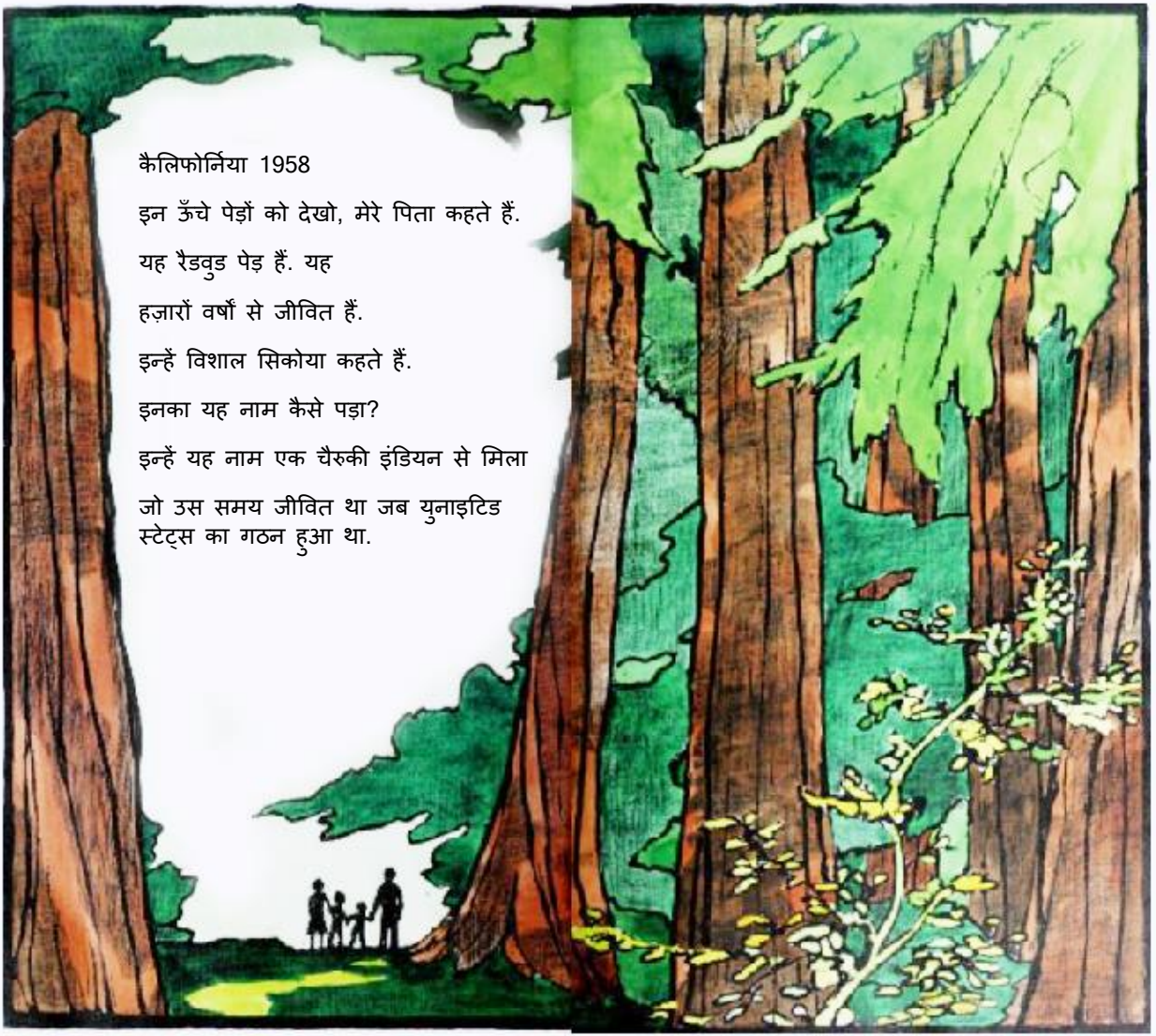
कैलिफोर्निया 1958
इन ऊँचे पेड़ों को देखो, मेरे पिता कहते हैं.
यह रैडवुड पेड़ हैं. यह
हज़ारों वर्षों से जीवित हैं.
इन्हें विशाल सिकोया कहते हैं.
इनका यह नाम कैसे पड़ा?
इन्हें यह नाम एक चैरुकी इंडियन से मिला
जो उस समय जीवित था जब युनाइटिड
स्टेट्स का गठन हुआ था.

यह सिकोयाह अवश्य ही प्रसिद्ध व्यक्ति रहा होगा, हमने कहा.

वह वीरता से लड़ा होगा और अपने लोगों का उसने कुशलता से नेतृत्व किया होगा.

वह इन पेड़ों के समान ऊँचा और मज़बूत रहा होगा.

हाँ, मेरे पिता उत्तर देते हैं, लेकिन उस तरह नहीं जिस तरह तुम सोच रहे हो.

सिकोयाह एक अपंग व्यक्ति था.

उसका जन्म 1765 के आसपास पूर्वी टैन्नसी में हुआ था.

उसकी माँ चैरुकी महिला थी और पिता एक श्वेत थे जिसके बारे में उसे कोई जानकारी नहीं थी.

जीवन के लंबे काल तक उसे कोई न जानता था.

वह एक कारीगर था और धातु की वस्तुयें जैसे कि लोहे की छैनी और ड्रिल और चाँदी के चम्मच और काँटे बनाता था.

सिकोयाह अपने कबीले का मुखिया नहीं था लेकिन वह अपने कबीले के लोगों से बहुत प्यार करता था.

वह चाहता था कि धरती के दूसरे लोगों के समान उसके लोग भी सिर उठा कर गर्व के साथ जीयें.

वह नहीं चाहता था कि श्वेत लोगों की दुनिया में वह लुप्त हो जायें.

वह नहीं चाहता था कि उनकी चैरुकी भाषा मिट जाये.

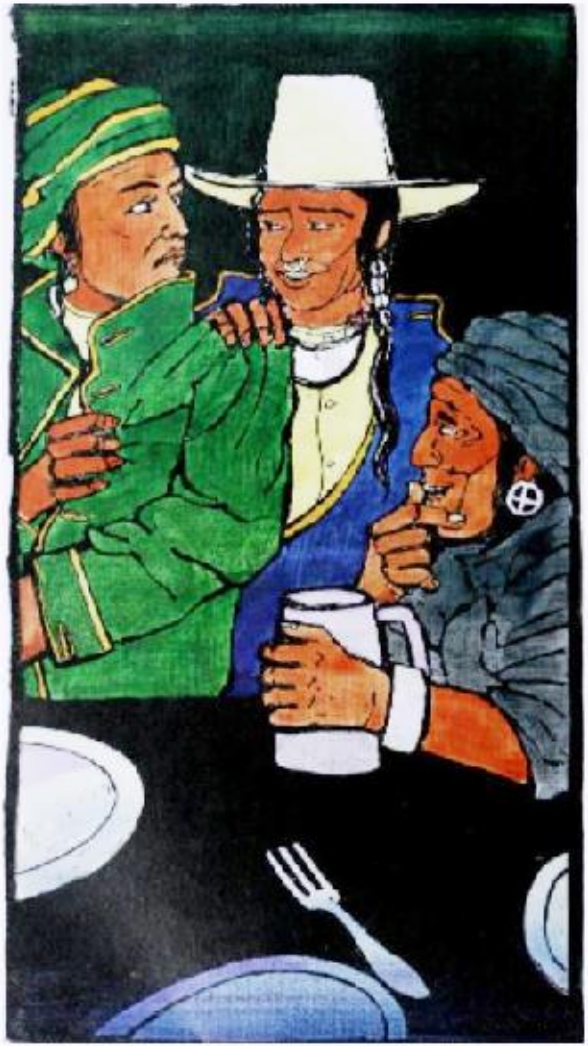

ऐसा कहा जाता है कि जब वह पचास वर्ष का हुआ तो उसने निश्चय किया कि चैरुकी भाषा को वह लिखने का प्रयास करेगा.

लेकिन लोग कहते हैं कि सिकोयाह इंग्लिश भाषा का एक अक्षर भी पढ़ना या लिखना नहीं जानता था.

लेकिन इससे सिकोयाह को कोई फर्क न पड़ा.

“मैं अपने लोगों के लिए भाषा का आविष्कार करुंगा,” उसने कहा.

हर कोई उस पर हँसने लगा.

“पढ़ने-लिखने से हम समर्थ बनेंगे.”

लेकिन किसी ने उसका विश्वास न किया.

सिकोयाह ने सैंकड़ों चिन्ह अंकित किए, हर शब्द के लिए एक चिन्ह.

उसने इन चिन्हों को लकड़ी की पट्टियों और तख्तियों पर अंकित किया. उसका केबिन चिन्हों से अंकित तख्तियों से भर गया.

“वह पगला गया है,” लोग उसका मज़ाक उड़ाते. उन्हें लगता था कि उसके चिन्ह अशुभ थे.

“हमें उसे चेतावनी देनी चाहिए,” कुछ लोगों ने कहा. पढ़ने-लिखने में उन्हें अपना कोई हित दिखाई न थे रहा था.

“उसके केबिन को आग लगा देते हैं,” लोग चिल्लाए. “हमें उसे रोकना ही होगा.”

लोगों ने उसके केबिन को आग लगा दी.
उसकी सारी पट्टियाँ जल कर राख हो गईं.

लेकिन उस घटना से सिकोयाह ने एक अलग ही पाठ सीखा.

कभी-कभी भीषण दुर्घटना भी कारणवश होती है.

कभी-कभी ऐसी घटना संकेत देती है,

“अलग पथ पर चलो.”

ऐसा कहा जाता है कि सिकोयाह ने अब हर शब्द के लिए एक चिन्ह अंकित करना बंद कर दिया. इतने अधिक चिन्ह बन गए थे कि सब चिन्हों को याद रखना किसी के लिए संभव न था.

कहा जाता है कि उसने अक्षर आविष्कार करने शुरु किए, अपनी भाषा की हर वाणी को अंकित करने के लिए भिन्न-भिन्न अक्षर.

जब उसने चौरासी अक्षर बना लिए तो उसने लिखना शुरु किया.

जब उसकी छह वर्ष की बेटी, अयोका ने पढ़ना सीख लिया तो उसके पड़ोसियों ने उस पर हँसने बंद कर दिया.

जब दो योद्धाओं ने एक-दूसरे को पत्र लिखे तो लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाना बंद कर दिया.

कहते हैं कि लोग जल्दी ही चैरुकी भाषा के अक्षर लिखना-पढ़ना सीख गए.

माँ और बाप, भाई और बहनें, संदेश लिख कर घरों में यहाँ-वहाँ रख देते थे ताकि वह एक-दूसरे को पढ़ने सीखा सकें.

कहते हैं कि अधिक समय न बीता था कि सब पढ़ना-लिखना सीख गए.

चैरुकी कबीले ने इस आविष्कार के लिए सिकोयाह की प्रशंसा की.

और 1824 में उन्होंने सिकोयाह को एक चाँदी का मैडल भेंट में दिया.

वूरसेस्टर के एक मिशनरी ने चैरुकी के घुमावदार अक्षरों को अंगरेज़ी के अक्षरों के समान बनाने में सिकोयाह की सहायता की ताकि इनको छापना आसान हो जाए.

इन नये अक्षरों का उपयोग कर चैरुकी लोगों ने अपनी भाषा में समाचार पत्र और किताबें छापीं और इस तरह निश्चित कर लिया कि उनकी भाषा कभी लुप्त न होगी.

जब सेना ने बलपूर्वक उन्हें अपनी धरती से खदेड़ कर पश्चिम की ओर भेज दिया तब भी चैरुकी अपनी किताबें साथ ले कर गए.

जब रोग के कारण उनके नगर आधे खाली हो गए तब भी उन्होंने लिखना-पढ़ना बंद न किया.

सिकोयाह की मृत्यु के कई वर्ष बाद भी, जब इंग्लिश बोलने वाले अध्यापक ही उनके बच्चों को पढ़ाते थे, उन्होंने अपनी भाषा याद रखी. उन्होंने अपनी भाषा को लुप्त न होने दिया.

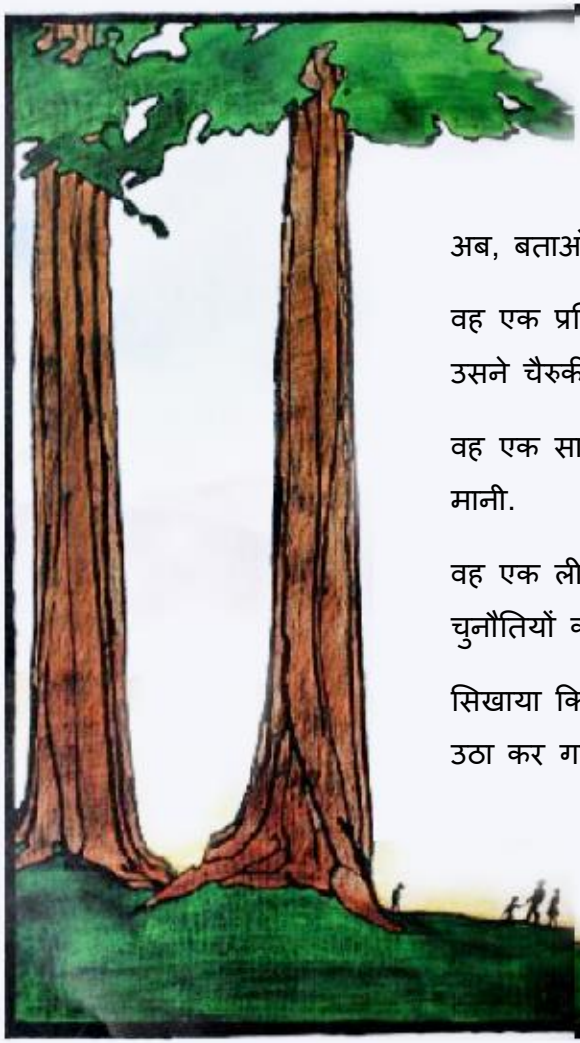

अब, बताओ सिकोयाह कौन था? मेरे पिता ने पूछा.

वह एक प्रसिद्ध व्यक्ति था, हम ने कहा, क्योंकि उसने चैरुकी भाषा के अक्षरों का आविष्कार किया.

वह एक साहसी आदमी था क्योंकि उसने कभी हार न मानी.

वह एक लीडर था क्योंकि उसने अपने लोगों को चुनौतियों का सामना करते हुए जीना सिखाया-

सिखाया कि किस तरह विशाल पेड़ों के समान सिर उठा कर गर्व से जीया जा सकता था.

सिकोयाह जैसे प्रतिभाशाली लोग विरले ही होते हैं. पिछले सात हज़ार वर्षों में ऐसे गिने चुने लोग हुए हैं जो दावा कर सकते हैं कि उन्होंने किसी भाषा की पूरी अक्षरमाला का आविष्कार किया है. सिकोयाह की अक्षरमाला वैसी नहीं थी जैसी हमारी है. उसने चौरासी अक्षरों की माला बनाई. उसकी बनाई अक्षरमाला अभी भी उपयोग में है. सिकोयाह का सम्मान सिर्फ चैरुकी लोग ही नहीं करते. वह सारे देश का हीरो है और उसकी मूर्ति यूएस कैपिटल इमारत में स्थापित की गई है. लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस के दरवाज़ों पर उसका चित्र अंकित है. सिकोया पेड़ों की वैज्ञानिक जानकारी स्टीफन एंडलिकर नाम के एक आदमी ने दी थी. उसकी मृत्यु के बाद वैज्ञानिकों को उसके विवरण में एक अनोखा नाम मिला जिसे पढ़ना कठिन था. कुछ को लगा कि वह नाम सिकोयाह था. यह कैसे संभव था कि यूरोप का रहने वाला व्यक्ति चैरुकी व्यक्ति के बारे में जानता था. पर एंडलिकर को संसार की अलग-अलग भाषायें पढ़ने और लिखने में दिलचस्पी थी.

सिकोयाह की कहानी कई बार कही गई है और उसके विषय में लिखी और कही हर बात शायद सत्य नहीं है. कई बातों के साथ दंत-कथायें भी जुड़ गई हैं. इसलिए इस कहानी में “लोग कहते हैं” “ऐसा कहा गया है” “कहते हैं” जैसी शब्दावली का उपयोग किया गया है.